'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १२६ | वाराणसी, मंगलवार, ३ नवम्बर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

हमरे (जम्मू-कश्मीर) ३०-७-'५९

छोटे लोगों के दान से बड़े लोगों के दिलों में फर्क आयेगा

कश्मीर-वैली में २० लाख लोग रहते हैं। उनमें से मैं सुनता हूँ कि ३-३॥ लाख लोग श्रीनगर में हैं। अनंतनाग, बारामुल्ला और सोपौर में कुल मिलाकर लगभग १ लाख लोग होंगे। इस तरह ४-४॥ लाख लोग शहरों में और करीब १६ लाख छोटे-छोटे गाँवों में हैं। ऐसे ही छोटे गाँवों में जैसे आपका यह छोटा गाँव हैं। ऐसे छोटे-छोटे गाँवों में १००-१५० लोग रहते हैं। कहीं किसी गाँव में ५० घर हैं तो उन पचासों घरवालों के अलग-अलग खयाल हैं। कहीं कोई मिलकर नहीं रहते हैं। इसीसे गाँवों में आपस-आपस में टक्कर होती रहती है। ऐसे टकराने से गाँव की ताकत कैसे बनेगी? अभी सैलाब आया तो घर बह गये, मवेशी बह गये, फसल भी बह गयी। यह सब हुआ। इस हालत में गाँवों को कौन बसायेगा?

मदद कैसे मिलेगी?

हम अल्लाह को याद करते हैं और सरकार को भी याद करते हैं। अल्लाह मदद करने के लिए बैठा है, लेकिन जो लोग मिल-जुलकर काम नहीं करते हैं, उन्हें अल्लाह मदद नहीं करता है। वह कहता है कि तुम लोग मिल-जुलकर काम नहीं करते हो, आपस-आपस में लड़ते-झगड़ते हो तो तुम्हें मेरी मदद कैसे मिलेगी? तुमको मैंने मनुष्य का चोला दिया है। वह इस तरह झगड़ने के लिए नहीं दिया है। तुम लोग एक हो जाओ। एक होकर मदद माँगो तो मिलेगी।

यह कहता है—"ऐ खुदा, मुझे मदद करो," वह भी कहता है—"हे अल्लाह, मुझे मदद करो।" दोनों एक-दूसरे के खिलाफ लड़ते हैं और लड़ने में मदद माँगते हैं। ऐसी हालत में मदद माँगने से कैसे मिलेगी? जब प्यार से तुम इकट्ठा रहोगे, तब मदद मिलेगी।

अल्लाह से मदद माँगनी है तो हमें क्या करना चाहिए? मिल-जुलकर काम करना चाहिए। इसलिए हम गाँववालों से कहते हैं कि तुम लोग एक हो जाओ। गाँव में तो तरह-तरह के लोग रहते हैं, किसान, बुनकर, वगैरह सबको एक-दूसरे की मदद करने का तय करना चाहिए। नहीं तो सरकार का काम भी बड़ा मुश्किल हो जाता है। सरकार की मदद भी हमें ठीक ढंग से मिले, इस वास्ते हमेंएक होना चाहिए। आज ही एक भाई हमसे कह रहे थे कि सरकार हमें मदद करती है, करना चाहती है, लेकिन बीच में दूसरे लोग मदद खा जाते हैं। गरीबों को मदद नहीं मिलती है, यह सुनकर हमें दुःख हुआ। मगर इसकी वजह यही है कि हम एक नहीं होते हैं। एक न होने से ही हमारी ताकत नहीं बनती है और बीचवाले मौका मिल जाता है तो बीच में ही खा जाते हैं। जब तक हम एक नहीं हो जाते, हमारा यही हाल रहेगा। सरकार के चाहने पर भी सरकारी मदद गरीबों को नहीं मिल सकेगी। गरीब ऐसे ही रह जायँगे, इसलिए हम सबको एक हो जाना चाहिए।

हम सबको प्रेम से बाँध दिया जाय, हाथ को हाथ, पाँव को पाँव बाँध दिया जाय। बाँधने का क्या मतलब? बाँधने से काम नहीं होगा? बाँधने का मानी यह है कि अल्लाह ने हमें जो नियामतें दी हैं, उन्हें हम बाँटकर खायें। अल्लाह ने हमें आसमाँ, रोशनी, हवा, पानी दिया है। जमीन भी दी है। यह सब हमें बाँटकर खाना चाहिए। (एक भाई ने बीच में उठकर कहा, "जमीन सबकी है।")

कहना नहीं, अब करना है

तोता बोलने लगा है। थोड़े समय बाद कुछ करने लगेगा, तब यह काम होगा। "तमुल-तमुल" (कश्मीरी में 'तमुल' याने 'चावल') कहनेभर से पेट नहीं भरेगा। बोलना तो शुरू किया, अब करना चाहिए। करने से इतना तो हो गया है कि किसीने १० कनाल में से ३ कनाल, किसीने ८ कनाल में से २ कनाल जमीन दान में दे दी। दान में मिली हुई यह जमीन अब बेजमीनों को मिलेगी। इसके आगे १०० कनाल में से ५० कनाल जमीन दो। फिर कुल दे दो। कुल लोग देते हैं, तब इन्कलाब होता है। जैसे सैलाब ने किया। सब बहा दिया। वैसे ही कुल लोगों को दे देना चाहिए। देने का सैलाब आना चाहिए—आ रहा है। छोटे-छोटे लोग देंगे तो बड़े-बड़े लोगों के दिलों में फर्क आयेगा। सबके दिल में फर्क आयेगा तो सबने दिया ऐसा होगा। सब देते हैं, तब फ़िज़ा बनती है। यह गाना गाइये: "हमारे गाँव में बेजमीन कोई न रहा, कोई न रहा।" (एक बच्चे को विनोबाजी ने बुलाया और यह गीत गाने को कहा। ताली के साथ सारी सभा ने यह गीत गाया। फिर कुछ लोगों ने दान दिया।)

गाँव में बेजमीन नहीं रहा, यह तब बनेगा, जब हर कोई देगा। अपना-अपना दिल खोलना चाहिए। हाथ खोलना चाहिए। गाते जाना, देते जाना—ऐसा होना चाहिए। ◆◆◆

www.vinoba.in

प्रार्थना-प्रवचन

डेराकीगली (जम्मू) २६-६-'५९

कुदरत और समाज की सेवा किये बिना खाना अपराध है !

एक दुनिया है, एक दीन है और एक अल्लाह है। यह अल्लाह, उसकी दुनिया और यह दीन, यह सब क्या है ? हमने अपने तजुर्बे से क्या पाया ? हम हैं, इसमें कोई शक नहीं। हमारी कुछ ख्वाहिशें हैं, यह भी हम महसूस करते हैं। हम प्यार करना चाहते हैं और कोई हमपर प्यार करे तो अच्छा लगता है। प्यार किये बिना दिल को तसल्ली नहीं होती और प्यार पाये बिना भी तसल्ली नहीं होती। हमें भूख लगती है, प्यास लगती है और नींद की भी जरूरत होती है। यह कुदरत है। पहाड़, पत्थर, पेड़, पौधे, फूल, अनाज, घास, पानी इसमें से कई चीजें हमारी जिन्दगी के लिए जरूरी हैं और कई जरूरी नहीं भी हैं। हम पानी पीना चाहते हैं। जरूरत पड़ने पर पानी में नहाना चाहते हैं,कपड़े भी धोना चाहते हैं, लेकिन डूबना नहीं चाहते। इस तरह दुनिया में कई चीजें मुफीद हैं, कई खिलाफ हैं और कई न मुफीद हैं, न खिलाफ हैं। हम हैं, हमारे जज्बात हैं और कुदरत है। इसमें से कौनसी चीज चाहिए और कौनसी नहीं चाहिए, यह हमें ही देखना होता है।

हमारा कुनबा

हम अकेले नहीं हैं। हमारा एक समाज है। इन्सान बाल-बच्चों के साथ रहता है। कई चीजें ऐसी होती हैं, जो हम टाल नहीं सकते। हम जिन्दगी को नहीं टाल सकते। हमारा जज्बा होता है, वैसे ही हमारे गालिब भी होते हैं। उनके बिना हमारा नहीं चलता। भाई-बहन, बाप-बेटे और पड़ोसी, इस तरह हमारा एक समाज है। गाय और मवेशी को भी हम अपने कुनबे में ही गिनते हैं। इन्सान की एक जाती है, मवेशी की दूसरी। लेकिन हम मवेशी का दूध पीते हैं। बच्चे को माँ का दूध नहीं मिलता तो मवेशी का दूध पिलाते हैं। मवेशियों पर हम प्यार करते हैं! गाय पालनेवाले जानते हैं कि जानवर का प्यार कैसा होता है ? घोड़ा और घोड़ेवाले का प्यार सभी जानते हैं। उसके प्यार में कोई फर्क नहीं करते। वह हमारे कुनबे का ही जुज्ब है। उसके बिना हमारी जिन्दगी का लुत्फ कम हो जाता है। बैल से भी किसान को बहुत प्यार होता है। ट्रैक्टर से वैसा प्यार नहीं होता। ट्रैक्टर दूध-घी-मक्खन नहीं देता। इन दिनों विज्ञान के कारण दूसरी-तीसरी चीजें ईजाद हो रही हैं। ऐसा ही होता रहा तो सारे जानवर मर जायँगे। अभी एक ऐसी किस्म का कपड़ा निकला है, जिसके कारण हवा और ठंढ से रक्षा होती है। उसी कपड़े से काम चल जाता है तो लोग भेड़ क्यों रखेंगे ? ट्रैक्टर है तो बैलों की क्या जरूरत है ? जीप होने से घोड़े की जरूरत खत्म हो गयी। इसलिए अब जानवरों की परवरिश कौन करेगा ? सारे जानवर मर जायँगे। हम जीयेंगे, लेकिन फिर आज जो हमारी जिन्दगी में लुत्फ है, वह नहीं रह जायगा।

गाय, बैल, घोड़े पर प्यार करने से जो तसल्ली मिलती है, वह मोटर पर प्यार करने से नहीं मिलती है। यह ठीक है कि मोटर की खिदमत करनी पड़ती है, उसे साफ करना पड़ता है, ठीक रखना पड़ता है और तेल भी देना पड़ता है। लेकिन क्या आप मोटर पर, साइकिल पर, ट्रैक्टर पर प्यार करेंगे ? मतलब यह कि आपको दूसरी चीजों से दूध-घी आदि मिल भी जायगा तो भी जानवरों के बिना जिन्दगी का लुत्फ खत्म हो जायगा। हम अपने बच्चों से प्यार करते हैं, वैसे ही जानवर से भी प्यार कर सकते हैं। जानवर भी अपने से प्यार करता है ! गूंगा जानवर बोल नहीं सकता, बावजूद इसके वह आँखों से और हाव-भाव से तो प्यार बताता ही है। उसका प्रेम देखकर इन्सान को इतनी खुशी होती है कि वह जानवर को भी अपने कुनबे में गिनता है। इस तरह हमारा एक समाज है, कुनबा है।

अल्लाह का अस्तित्व

समाज, कुदरत, हम और हमारा जजबा—ये सब सामूहिक हैं। आज तक मुझे ऐसा कोई आदमी नहीं मिला, जो यह कहता हो कि हम नहीं हैं, हमारा कुनबा नहीं है या हमें भूख नहीं है। यह ठीक है कि भूख है और फाका हो जाता है। एकादशी है, रमजान है, इससे भी इन्सान इन्कार नहीं कर सकता। हो-हो करके अगर वह किसीके बारे में इन्कार करेगा भी तो किससे करेगा ? अल्लामियाँ है या नहीं ? बस ! इसी चीज में मुखालिफत हो सकती है और बहस भी हो सकती है। लेकिन हमारी बहस से भी होता क्या है ?

अभी यह बात चल रही है कि हमें पीरपंजाल लाँघकर कश्मीर-वैली में जाना है। मालूम नहीं, हम इसे पार कर भी सकेंगे या नहीं ? पुरानी कहानी है। पांडव हिमालय जा रहे थे। तब द्रौपदी चलते-चलते यहीं रास्ते में ही गिर पड़ी। उसीके नाम से है यह 'पंजाल'। वह 'पांचाली' थी। 'पांचाली' से 'पंजाल' बना होगा। पांडव इसी रास्ते से गये थे। हम भी इसी रास्ते से जा रहे हैं। यह ठीक है कि यह 'साइन्स' का जमाना है। इस समय हमारे आगे-पीछे सहूलियत रखने की कोशिश की जायगी। मेरे साथ चलनेवाले ये लोग कहते हैं कि हम बाबा को सम्हालेंगे। लेकिन मैं पूछता हूँ कि ये क्या सम्हालेंगे ? दर असल सँभालनेवाला तो एक अल्लाह है। हमने बीज बोया, लेकिन हमारे बोने से कुछ नहीं होता। अल्लाह चाहेगा, तभी वह उगेगा। पुराने जमाने में साइन्स नहीं था। बच्चे पैदा होते और तत्काल मर भी जाते थे। बड़ी मुश्किल से कोई-कोई बचता था। बचनेवाला 'बच्चा' कहलाया। पहले तरह-तरह के रोग भी थे। डॉक्टर नहीं थे। अभी डॉक्टर हैं, दवाइयाँ भी हैं। इसलिए बच्चों की मृत्यु का प्रमाण कम है। लेकिन आखिर डॉक्टर भी क्या बचायेगा ? जो खुद मरनेवाला है, क्या वह दूसरे को बचायेगा ? हम हैं और मौत भी है। इसमें कोई शक नहीं कि हम सभी मरनेवाले हैं। हम अभी तक नहीं मरे, इसलिए हम मरेंगे ही नहीं—ऐसा कोई नहीं कहता। क्योंकि हमें मालूम है कि यह दुनिया फना होनेवाली है। कल क्या होगा, यह कोई नहीं बता सकता है। हम बोलते तो हैं कि शायद कल यहाँसे चले जायँगे। लेकिन जायँगे ही, ऐसा नहीं कह सकते हैं। कैसी डाँवाडोल हालत है ! हम यहाँसे जा सकेंगे या नहीं, यह कहना तो दूर की बात है, लेकिन यहाँसे पाँव भी उठा सकेंगे या नहीं—यह भी मालूम नहीं है। तब फिर आपके हाथ में रह क्या गया है ? ये ही सारी चीजें हैं, जो यह सोचने के लिए मजबूर करती हैं कि आखिर कोई न कोई एक ऐसी चीज जरूर है, जो अपनी ताकत से परे है। वही सबपर हुकूमत चलाती है। हम उसे परमात्मा कहते हैं, अल्लाह कहते हैं।

www.vinoba.in

हम और समाज एक हैं

परमात्मा पर भरोसा रखकर हम अपनी जिंदगी बसर करते हैं तो जिन्दगी में लुत्फ आता है। हमारी जिन्दगी में आनन्द एक और चीज से भी होता है। वह है—अपने को एक-दूसरे से अलग न मानना। माँ बेटे की खिदमत करती है। उसे खिलाकर खाती है। कभी खाना पूरा न हो तो उसे खिलाकर खुद फाँका भी कर लेती है। बेटे के लिए फाका करने और तकलीफ उठाने में माँ को खुशी होती है। यह खुशी क्यों होती है? इसलिए कि वह अपने में और बच्चे में फर्क नहीं मानती, भेद नहीं करती। बच्चा खुश है तो माँ खुश और बच्चा दुःखी है तो माँ भी दुःखी है। दोनों के जीवन में एकरूपता है। ये दोनों तौहीद हैं। माँ की और बच्चे की जिन्दगी में तौहीद है। ऐसी तौहीद हम और हमारे समाज में होनी चाहिए। हमें हम और समाज एक हैं, ऐसा खयाल करना चाहिए। गाँव, पड़ोसी, मवेशी आदि सब एक हैं, ऐसा हम महसूस करें तो दिल वसी बनेगा। उसके बाद जिस आनन्द का अनुभव होगा, उसका बयान लफ्जों में नहीं हो सकेगा। माँ को जो खुशी होती है, वह एक छोटे दायरे में होती है, हमारा दायरा उससे भी बड़ा होना चाहिए।

यत्पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे

यह दुनिया, पहाड़, पत्थर, सूरज वगैरह इन सबमें हम हैं, ऐसा हमें अनुभव होना चाहिए। अगर हमारे पास आँख नहीं होती तो यह सूरज खत्म हो जाता। हम उसे नहीं देख सकते। हवा है, लेकिन नाक न हो तो हम जी नहीं सकते। इधर आँख है, उधर सूरज। इधर साँस है, उधर हवा। इधर हड्डी है, उधर लोहा। लोहा अपने खून में है। अगर हमारे जिस्म में लोहा कम हो जाय तो हमें ऐसी चीजें खानी पड़ती हैं, जिससे अपने खून में लोहा मिल जाय। देहात के भाई अभी यह बात नहीं जानते हैं। उन्हें यह समझना चाहिए कि लोहा, सोना वगैरह भी अपने खून में होता है। जब जिस्म में सोना कम हो तो सोने का 'इन्जेक्शन' लेना पड़ता है। इधर खून है, उधर पानी। शरीर में से पानी सूख जाय तो खून का क्या होगा? सामने मिट्टी है। मेरा जिस्म भी इसी मिट्टी का है। हवा, पानी आदि सभी अपने जिस्म है। यह जिस्म कुदरत का ही हिस्सा है। हम कुदरत की खिदमत करते हैं। हम फल खाते हैं तो पेड़ों को पानी भी देते हैं। इस कुदरत की खिदमत किये बिना लेना पाप है।

प्यार को मर्यादित मत करो

हमने हमपर याने अपने जिस्म पर ही सबसे ज्यादा प्यार किया है। आखिर यह जिस्म है क्या? यह गंदा नाला है। इसमें मलमूत्र बहता है। इसे हम अपने हाथ से साफ करते हैं। यह जिस्म हर रोज गंदा होता है और मैं इसे हर रोज नहलाता हूँ। ६४ साल तक मैंने इसे नहलाया, अब ४ दिन न नहलाऊँ तो यह इतना गंदा हो जायगा कि इसकी पहचान भी नहीं होगी। इतना गंदा जिस्म होने पर भी हम इसे प्यार करते हैं। यह प्यार कम किये बिना हम कुदरत को, समाज को, अल्लाह को प्यार नहीं कर सकेंगे। हर रोज यह मेरी जरूरत है, मेरी भूख है, ऐसे ही करते रहेंगे और शरीर को देते रहेंगे तो उन सबको क्या देंगे? कुदरत को, समाज को और पड़ोसी को प्यार किये बिना हम सुखी नहीं हो सकेंगे।

एक भाई ने कहा कि मेरे घर में जो हवा और रोशनी है, वह मेरी है। मैं उसे बाहर नहीं जाने दूँगा। ऐसा कहकर उसने अपने घर के दरवाजे और खिड़कियाँ बंद कर लीं। नतीजा यह हुआ कि उसके घर में बाहर की हवा और रोशनी का आना भी बंद हो गया। इससे उसने क्या पाया? उल्टा उसने खो दिया। वैसे ही जिसने प्यार को एक जिस्म में, मरकज में डाला, उसने सब कुछ खो दिया।

अपनेपर जो प्यार है, वह कम करो और दूसरों पर, कुदरत पर, अल्लाह पर प्यार करो! इसीका नाम है भूदान और ग्रामदान। आठ साल से हम यही बात समझा रहे हैं। अल्लाह, कुदरत, आसपास के लोग, भाई, बहन आदि सभीने आपपर बचपन से ही प्यार किया। आज की ही बात है। बाबा यहाँ आया तो बाबा पर भी सभीने प्यार बरसाया। आज इस बीहड़ स्थान में भी आपने बाबा को अच्छा मकान दिया। घी, दूध, तरकारी खाने को दी। लोग बाबा को खिदमतगार कहते हैं, लेकिन बाबा ज्यादा खिदमत लेता है, खूब प्यार पाता है।

हम पाते तो खूब हैं, लेकिन वापस देते क्या हैं? यह हमें सोचना चाहिए। अगर हम कुछ न देकर भी इतना पा लेते हैं तो कुछ देने लगेंगे तो कितना पायेंगे? इसका हिसाब क्या कोई उस्ताद कर सकता है? दो रुपये के दस आम तो चार रुपये के कितने? यह हिसाब उस्ताद कर सकते हैं, पर वह नहीं। कुरान में कहा है कि अल्लाह हमें गैर हिसाब से देता है। हाँ, अगर हम गलत काम करते हैं तो अल्लाह हमें उतनी ही मात्रा में सजा देता है और अगर हम अच्छा काम करते हैं तो वह दस गुना देता है।

[सभा में ४० कनाल जमीन दान में मिली, ऐसा सुनकर विनोबाजी ने कहा] आज आपने हमें हल्का सा नाश्ता खिलाया है। प्यार से जो भी खिलाया जाता है, वह अल्लाह के दरबार में पहुँच जाता है। इसलिए हम यह ले रहे हैं। लेकिन हम जमीन की मिल्कियत ही खत्म करना चाहते हैं। ◆◆◆

सभी सर्वोदय-विचार से सहमत

एक पंचवर्षीय योजना के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी—इस तरह चलता ही रहेगा। नये-नये खानेवाले आयेंगे और नये-नये बेकार हाथ आयेंगे। हाथों की बेकारी बढ़ेगी, खानेवाले मुँह बढ़ेंगे, योजनाएँ चलती ही रहेंगी। योजना बनानेवाले कहते हैं कि 'हम सर्वोदय का प्लान करना चाहते हैं। नाम सर्वोदय का नहीं लेते हैं, क्योंकि वह बहुत बड़ी बात है।' मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि वे लोग नाम से भले ही डरें, लेकिन अब उनका सारा प्लान भी उसी जगह आयेगा, जहाँ सर्वोदय है। वहाँ आये बगैर उन्हें चारा नहीं है।

राजाजी से पूछा गया कि भूदान-ग्रामदान के बारे में आपकी स्वतन्त्र पार्टी के क्या विचार हैं? इसपर राजाजी ने जवाब दिया कि "भूदान-ग्रामदान बहुत ऊँचा विचार है।" मैं तो मानता हूँ कि सबकी खुशी से जमीन एक करना याने बिछुड़ा हुआ कुटुम्ब एक करना है। कांग्रेस, सोशलिस्ट पार्टी, प्रजासमाजवादी पक्ष, कम्युनिस्ट पार्टी आदि कोई भी पार्टी ग्रामदान के खिलाफ नहीं बोल सकती है। ये जो सारे सियासतदाँ, जिन्हें मैं नादाँ कहता हूँ, आपस में चाहे जितना लड़ें, लेकिन सर्वोदयवालों के साथ नहीं लड़ सकते हैं। क्योंकि यह विचार इतना पौष्टिक और रुचिकर है कि कोई भी इसे नहीं टाल सकता। अब इस विचार को जनता तक पहुँचाने की बात है।

www.vinoba.in

प्रार्थना-प्रवचन

सूरनकोट (जम्मू-कश्मीर) २८-६-'५९

हम मुश्तरका काश्त नहीं चाहते, मुश्तरका मिलकियत चाहते हैं

आज कुछ लोगों ने हमारे पास दर्खास्तें दीं और कहा कि हमें जमीन मिलनी चाहिए। मैंने कहा कि कश्मीर में जमीन का मसला हल हो गया है और यहाँ बाबा के काम की जरूरत नहीं है, ऐसा कहा जाता है लेकिन हम यह देख रहे हैं कि मसला ज्यों का त्यों खड़ा है। यहाँपर २२ एकड़ का सीलिंग बना। लेकिन लोगों ने आपस में जमीन तकसीम कर ली। बाद में बची हुई थोड़ी-सी रद्दी जमीन सरकार को मिली है। सो मुजारों में तकसीम हुई। जब मुजारे हमसे मिलते हैं, तब कहते हैं कि मालिकों को चौथाई हिस्सा देने की तकलीफ अब नहीं रही। वे समझते नहीं कि उन्हें तकलीफ नहीं रही तो क्या मालिकों को कुछ खोना पड़ा? इस तरह हर कोई अपनी-अपनी बात सोचता है। मैं सबसे यही कहता हूँ कि हमें अब अलग-अलग नहीं सोचना चाहिए। मालिक, मुजारे और बेजमीन—सबका भला कैसे हो, इस बात पर सबको इकट्ठा होकर सोचना चाहिए। सबका भला करने की एक ही तरकीब हो सकती है। इसके लिए जमीन की मिलकियत मिटानी होगी। हमें समझना चाहिए कि मालिक वही (परमात्मा) एक हो सकता है। हम मालिक बनना चाहेंगे तो उसकी बराबरी में हो जायँगे। याने यह शिरकत हो जायगी, जो गलत बात है।

जमीन किसे देते हैं?

आज एक भाई ने हमसे एक मजेदार सवाल किया कि आप सबको जमीन देना चाहते हैं, लेकिन जो शख्स आलसी है, सुस्त है, काश्त नहीं कर सकता है, उसे जमीन क्यों देते हैं? मैंने कहा कि वह काहे जमीन लेगा? क्या वह मिट्टी खायेगा? जो मेहनत करना जानता है और चाहता है, वही जमीन माँगेगा। इसलिए हम हरएक के सिर पर जमीन लादना नहीं चाहते हैं, बल्कि जो काश्त करना जानता है, काश्त करना चाहता है और जिसके पास जिंदगी गुजारने का दूसरा जरिया नहीं है, उसीको हम जमीन देते हैं।

तकसीम करने की जिम्मेवारी

एक भाई ने अजीब सवाल किया कि जैसे आपको मुफ्त में जमीन मिली, वैसे ही क्या दूसरों को भी जमीन मुफ्त में ही दी जायगी? मैंने कहा कि जी हाँ मुफ्त में दी जायगी? उन्होंने कहा कि तकसीम का काम जिनके जिम्मे सौंपा है, वे गरीबों से पैसे लेकर जमीन देंगे, ऐसा मुझे लगता है। इसलिए आप इस बदमाशी को कैसे रोकेंगे? मैंने कहा कि जमीन को तकसीम करने की जिम्मेवारी मेरी है, आपकी है और जिन्होंने दान दिया, उनकी भी है। हमने डी० सी० पर जिम्मेवारी डाली है, डी. सी. पैसा लेकर जमीन दे, ऐसा नहीं कर सकता है। डी. सी. की मदद में दूसरे लोग भी जायँगे। कहीं एक भी केस गलत हुआ तो हमारे सामने रखो। उसकी बाकायदा तलाश होगी। हम कहना चाहते हैं कि ऐसी बात कतई नहीं होगी। नेकी और भलाई ही हमारी ताकत है। वही ताकत लेकर हम घूम रहे हैं। लोग यह धड़ाधड़ दान किस ताकत से दे रहे हैं? आज यहाँपर चार-पाँच भाइयों ने दान दिया तो किस ताकत से दिया? हम प्रेम से बात समझाते हैं और लोगों के दिलों को वह जँच जाती है। हम सादी बात समझाते हैं कि भाई, जैसे तुम्हें जीने का हक है, वैसे ही सबको है। सब अल्लाह की खिलकत है। अल्लाह चाहता है कि सब उसके बन्दे बनें और प्रेम से रहें।

हमारी कोई जिद नहीं

एक भाई ने सवाल किया कि आप मुश्तरका काश्त की बात करते हैं, लेकिन लोगों को उसमें दिलचस्पी नहीं है। अपनी जमीन हो तो काश्त करने में दिलचस्पी रहती है। मैं कहना चाहता हूँ कि हम मुश्तरका काश्त नहीं चाहते हैं, बल्कि मुश्तरका मिलकियत चाहते हैं। लोग अलग-अलग काश्त भी कर सकते हैं और मुश्तरका भी कर सकते हैं। इसके बारे में सब जगह अलग-अलग तजुरबे हो सकते हैं। इस मामले में हमारी कोई जिद नहीं है। हम इतना ही कहते हैं कि जमीन की मिलकियत अल्लाह की कुदरत के खिलाफ है। जब तक वह कायम रहेगी, तब तक समाज में कशमकश जारी रहेगी। चोरियाँ, डाके वगैरह चलते रहेंगे। देशे की दौलत नहीं बढ़ेगी। इसीलिए हम गाँववालों से कहते हैं कि आप जमीन की मिलकियत छोड़ दीजिये और सारे गाँव का जिम्मा उठाइये। गाँव के सब लोगों को खाना और रोजी देने का इंतजाम करना हमारा काम है—यों सोचकर मंसूबा बनाइये। जो पैदा होगा, हम सब बाँटकर खायेंगे। हम चढ़ेंगे तो साथ चढ़ेंगे और गिरेंगे तो साथ गिरेंगे। किसी अकेले को गिरने नहीं देंगे।

मैं नाम नहीं चाहता

मैं चाहता हूँ कि हर जमीनवाला जमीन दे। चन्द लोगों ने दिया और चन्द लोगों ने नहीं दिया तो उसके मनी यह हुआ कि अभी लोगों का दिल खुलना बाकी है। मैं किसीपर कोई दबाव नहीं डाल सकता हूँ। मैं तो अल्लाह का पैगाम सुनाता हूँ। मैं मानता हूँ कि कोई आज के देनेवाले हैं, कोई कल के देनेवाले हैं और कोई परसो के देनेवाले हैं। हर कोई देनेवाला है ही। यह मेरा भरोसा है। मैं आज यहाँ हूँ और कल यहाँसे चला जाऊँगा। मेरे जाने के बाद काम करनेवाले कुछ लोग निकलेंगे, तब तो यह झरना बहता रहेगा, नहीं तो यह कहा जायगा कि एक शख्स आया था और उसने प्यार की बात की, उसके जाने के बाद कुछ नहीं हुआ। इससे मेरा नाम होगा। लेकिन मैं नहीं चाहता हूँ कि मेरा नाम हो और आप सब बदनाम हों। मैं तो चाहता हूँ कि गाँव के लोगों का नाम हो। इसीलिए मैं उम्मीद करता हूँ कि मेरे जाने के बाद मेरा काम जारी रखनेवाले कुछ जवान खिदमतगार निकलेंगे। ◆◆◆

अनुक्रम

१. छोटे लोगों के दान से बड़े लोगों के दिलों में...
हमरे ३० जुलाई '५९ पृष्ठ ७५१
२. कुदरत और समाज की सेवा किये बिना खाना अपराध है
डेराकीगली २६ जून '५९ ,, ७५२
३. हम मुश्तरका काश्त नहीं चाहते, मुश्तरका...
सूरनकोट २८ जून '५९ ,, ७५४

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in